विदित
पब्लिकेशन

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग

सत्यमेव जयते

स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी

स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी

★

प्रश्न-पत्र-1
सामान्य अध्ययन

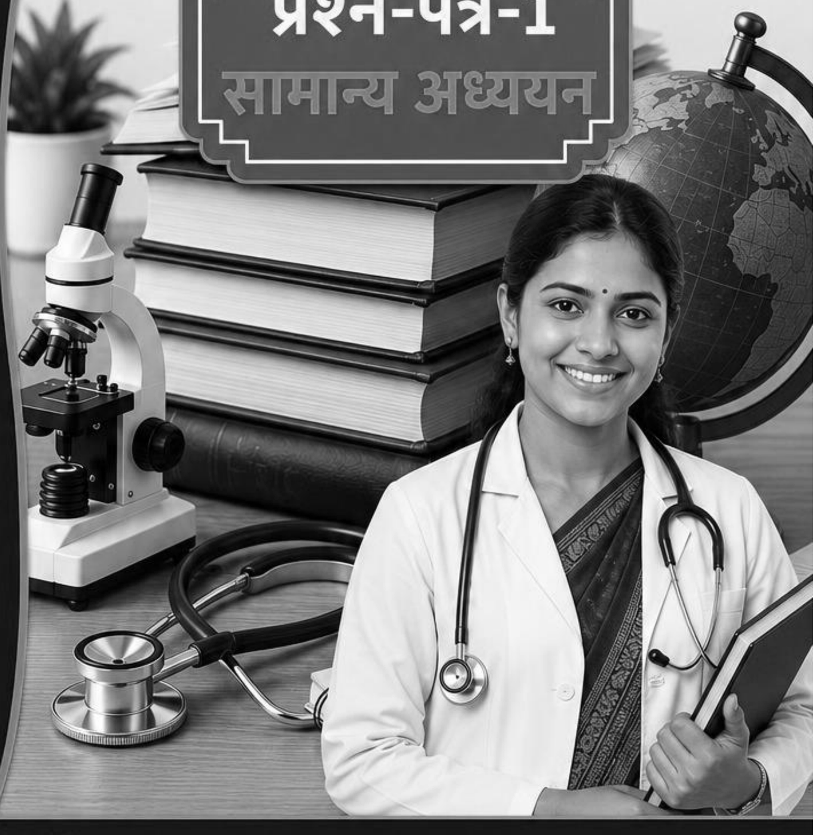

विशेष विशेषताएँ

- विशेषज्ञों द्वारा तैयार की गई सामग्री
- परीक्षा-केंद्रित दृष्टिकोण
- सरल भाषा और स्पष्टता
- अपडेटेड एवं विश्वसनीय सामग्री

हल किए गए प्रश्न-पत्र
सिद्धांत + बहुविकल्पीय प्रश्न

- पिछले वर्षों के प्रश्न
- विषय-वार प्रश्न
- नवीनतम पैटर्न पर आधारित

विदित पब्लिकेशन, प्रयागराज, 8858920081

SN	TOPIC	Pages
	1. भारत का इतिहास एवं भारतीय स्वाधीनता संग्राम :-	
1.1	हड़प्पा संस्कृति: सामान्य परिचय	1-14
1.2	मध्यकालीन भारत	15-15
1.3	दिल्ली सल्तनत	16-19
1.4	मुगल साम्राज्य	20-24
1.5	विजयनगर साम्राज्य	25-27
1.6	आधुनिक भारत	28-31
1.7	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम	32-38
	2. भारत एवं विश्व का भूगोल :-	
2.1	भारत की सामान्य जानकारी	39-57
2.2	विश्व भूगोल	58-71
	3. भारतीय राजनीतिक व्यवस्था एवं भारतीय संविधान :-	
3.1	संविधान सभा	72-76
3.2	प्रस्तावना	77-77
3.3	मूल अधिकार	78-79
3.4	राज्य के नीति निर्देशक तत्व	80-80
3.5	मूल कर्तव्य	81-81
3.6	भारतीय राजनीतिक प्रणाली	82-83
3.7	संसद	84-86
3.8	राज्य की कार्यपालिका	87-88
3.9	भारत की न्यायिक व्यवस्था	89-93
3.10	स्थानीय स्वशासन	94-95
3.11	उत्तर प्रदेश की राजनीतिक व्यवस्था	96-96
	4. भारतीय समाज एवं अर्थव्यवस्था :-	
4.1	भारतीय समाज के मुद्दे एवं चुनौतियां	97-98
4.2	आर्थिकी के उपागम	99-99
4.3	आजादी के पश्चात भारत में हुए प्रमुख आर्थिक सुधार	100-106
4.4	औद्योगीकरण	107-109

4.5	नगरीकरण	110-110
4.6	विभिन्न वर्गों के लिए नीतियां एवं कल्याणकारी उपाय	111-112
4.7	स्वास्थ्य के आयाम	113-115
4.8	बीमारी एवं स्वच्छता के पहलू	116-120
4.9	मानव पारिस्थितिकी	121-123
	5. राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय महत्व की सम-सामयिक घटनायें:-	
5.1	राष्ट्रीय करेंट अफेयर्स	124-126
5.2	अर्थव्यवस्था	127-130
5.3	पर्यावरण	131-138
	6. भारतीय कृषि :-	
6.1	कृषि	139-147
6.2	एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन	148-149
6.3	कृषि उत्पाद एवं उनके विपणन	150-151
	7. सामान्य विज्ञान (कक्षा 10वीं स्तर तक):-	
7.1	पोषण	152-163
7.2	परमाणु के मूलभूत कण, समस्थानिक एवं समभारिक	164-167
	8. प्रारम्भिक गणित (कक्षा 10वीं स्तर तक):-	
8.1	वास्तविक संख्या	168-172
8.2	बहुपद	173-177
8.3	दो चरों में रैखिक समीकरणों का युग्म	178-182
8.4	अंकगणितीय श्रेणी	183-186
8.5	त्रिकोण (त्रिभुज)	187-188
8.6	वृत्तों से संबंधित क्षेत्रफल	189-191
8.7	पृष्ठीय क्षेत्रफल और आयतन	192-195
	9. सामुदायिक चिकित्सा :-	
9.1	राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन	196-205
9.2	सामुदायिक लामबंदी	206-207
	10. स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी परीक्षा — 2005 (SSA)	208-217

पुस्तक के बारे में दो शब्द

प्रस्तुत पुस्तक **'VIDIT Publication' उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)** द्वारा आयोजित स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी (HEO) मुख्य परीक्षा के प्रथम प्रश्न-पत्र **'सामान्य अध्यन' (General Studies)** के नवीनतम पाठ्यक्रम और प्रकृति को ध्यान में रखकर तैयार की गयी है। इस पुस्तक में दिए गए सभी विषयों के महत्वपूर्ण तथ्यों और अवधारणाओं का संकलन किया गया है। परीक्षार्थियों की सहायता के लिए इसमें अद्यतन सरकारी आंकड़ों (Public Data) तथा आयोग के मानक स्तर का विशेष ध्यान रखा गया है।

इसे अधिक से अधिक लाभप्रद एवं उपयोगी बनाने के लिए प्रत्येक खण्ड में विस्तृत विषयवस्तु एवं विश्लेषणात्मक जानकारी का समावेश इस प्रकार किया गया है कि अभ्यर्थियों को परीक्षा में कोई कठिनाई न हो। प्रस्तुत पुस्तक को त्रुटिरहित और स्तरीय बनाने में जिन विशेषज्ञों तथा सहकर्मियों का हमें सहयोग मिला, उनके प्रति हम कृतज्ञता प्रकट करते हैं। निरंतर सतर्क प्रयासों के बावजूद पुस्तक में मानवीय भूलवश कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सुधी पाठकों व अभ्यर्थियों के रचनात्मक सुझाव सदैव आमंत्रित हैं।

आदित्य त्रिपाठी

स्वास्थ्य शिक्षा अधिकारी पद हेतु पाठ्यक्रम
स्क्रीनिंग परीक्षा
विषय सामान्य अध्ययन

1. **भारत का इतिहास एवं भारतीय स्वाधीनता संग्राम :-**

   हड़प्पा संस्कृति, वैदिक संस्कृति, जैन एवं बौद्ध धर्म, मौर्य वंश, कुषाण वंश, गुप्त वंश; दिल्ली सल्तनत, मुगल साम्राज्य और भारत का स्वतंत्रता आन्दोलन।

2. **भारत एवं विश्व का भूगोल :-**

   भारत का भूगोल भारत का भौतिक एवं सांस्कृतिक परिचय, भारत में कृषि, खनिज, विविध संसाधन, परिवहन एवं नगरीकरण, भारत के बंदरगाह, पर्यावरण एवं प्रदूषण, आयात एवं निर्यात, उत्तर प्रदेश की सामान्य भौगोलिक जानकारी।

   विश्व का भूगोल भौतिक भूगोल, सौरमंण्डल, स्थलमण्डल, वायुमण्डल, जलमण्डल, जैवमण्डल, मानव एवं आर्थिक भूगोल, पर्यावरण एवं सतत विकास।

3. **भारतीय राजनीतिक व्यवस्था एवं भारतीय संविधान :-**

   भारतीय संविधान, संघीय प्रणाली, भारतीय राजनीतिक प्रणाली, संवैधानिक एवं वैधानिक निकाय, भारत में स्थानीय स्वशासन, उत्तर प्रदेश की राजनीतिक व्यवस्था।

4. **भारतीय समाज एवं अर्थव्यवस्था :-**

   भारतीय समाज के मुद्दे एवं चुनौतियाँ; आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण, नगरीकरण एवं भूमण्डलीकरण; आर्थिकी के उपागम; आजादी के पश्चात आर्थिक सुधार; विभिन्न वर्गों के लिए नीतियाँ एवं कल्याणकारी उपाय; स्वास्थ्य के आयाम, बीमारी एवं स्वच्छता के पहलू; राज्य एवं स्वास्थ्य देखभाल; मानव पारिस्थितिकी, मानवीय विकास एवं सतत् विकास; पर्यावरण आंदोलन एवं चिंतायें।

5. **राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय महत्व की सम-सामयिक घटनायें:-**

   खेल-कूद के साथ राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय महत्व की समसामयिक घटनायें।

6. **भारतीय कृषि :-**

   भारत में प्रमुख फसलों की उत्पादन तकनीकी, एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन (आई.पी.एम.), कृषि उत्पाद एवं उनके विपणन।

7. **सामान्य विज्ञान (कक्षा 10वीं स्तर तक):-**

   पोषण, पाचन क्रिया, पोषक तत्वों की कमी (विटामिन एवं खनिज), जीवाणुजनित और विषाणुजनित रोग, प्रकाश संश्लेषण, औषधीय पौधे, डी.एन.ए., आर.एन.ए., इकाई, माप, काम, ऊर्जा, पृष्ठ तनाव, श्यानता, मनुष्य की आँख, दर्पण, लेन्स, विद्युत आवेश, प्रतिरोध, चुम्बकीय क्षेत्र, परमाणु के मूलभूत कण, समस्थानिक, समभारिक, तत्व, अणु, धातु, अधातु, अम्ल, क्षार, लवण, साबुन, डिर्टजेन्ट, प्राकृतिक एवं कृत्रिम मधुरक।

8. **प्रारम्भिक गणित (कक्षा 10वीं स्तर तक):-**

   वास्तविक संख्या, अंकगणित के मूलभूत प्रमेय, बहुआयामी पद, दो चरों वाले रैखिक समीकरण युग्म, अंकगणितीय प्रगति, त्रिकोण, वृत्त से सम्बन्धित क्षेत्रफल, सतह क्षेत्र और आयतन।

9. **सामुदायिक चिकित्सा :-**

   राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, भारत में राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम, स्वास्थ्य शिक्षा एवं व्यवहार परिवर्तन संचार (बी.सी.सी.), सामूहिक गतिशीलता एवं संसाधन गतिशीलता।

1.1 हड़प्पा संस्कृति: सामान्य परिचय

- हड़प्पा सभ्यता विश्व की प्राचीनतम और उन्नत शहरी सभ्यताओं में से एक थी, जिसे सिंधु घाटी सभ्यता भी कहा जाता है, जिसका विस्तार भारत एवं पाकिस्तान दोनों में था।
- वर्ष 1921 में तत्कालीन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अध्यक्ष जॉन मार्शल के निर्देशन में हड़प्पा स्थल की जानकारी प्राप्त हुई।
- इसका परिपक्व काल लगभग 2600 ई.पू. से 1900 ई.पू. तक माना जाता है और बाद में इसका पतन हो गया।
- इस सभ्यता का विस्तार पश्चिम में सुत्कागेन-दोर से लेकर पूर्व में आलमगीरपुर (उप्र) तक तथा उत्तर में मांडा (जम्मू) से दक्षिण में दायमाबाद (महाराष्ट्र)तक फैला हुआ थ।
- यह क्षेत्र त्रिभुजाकार है जिसका क्षेत्रफल लगभग 12,99,600 वर्ग किलोमीटर था।
- मोहनजोदड़ो सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल है तथा राखीगढ़ी भारत में सिंधु सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल है।
- पाकिस्तान में स्थित प्रमुख स्थल- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, सुत्कागेंडोर, चन्हूदड़ों, कोटदीजी
- भारत में स्थित प्रमुख स्थल:

राज्य	**संबंधित स्थल**
राजस्थान	कालीबंगा
गुजरात	धौलावीरा, लोथल, रंगपुर, सुरकोटदा, देसलपुर, कुंतासी
हरियाणा	राखीगढ़ी, बनावली, मीताथल, कुणाल
पंजाब	रोपड़, संघोल
उत्तर प्रदेश	आलमगीरपुर
जम्मू-कश्मीर	मांडा

प्रमुख स्थल/खोजकर्ता/नदी/प्राप्त सामग्री

प्रमुख स्थल	**खोजकर्ता**	**नदी**	**प्राप्त सामग्री**
हड़प्पा	दयाराम साहनी	रावी नदी	मुहरें, अन्नागार, शंख से निर्मित बैल 16 भट्टियां
मोहनजोदड़ो	राखलदास बनर्जी	सिंधु नदी	वृहद स्नानागार, कांसे की नृत्य करती लड़की की मूर्ति, सूती कपड़ा, पुजारी राजाओं की मूर्ति, पशुपति मुहर
धौलावीरा	आर. एस. बिष्ट	घग्घर नदी	तीन भागों में विभाजित एकमात्र शहर, जल प्रबंधन प्रणाली, स्टेडियम
कालीबंगा	अमलानंद घोष	घग्घर नदी	अग्निकुंड, जुते हुए खेत के प्रमाण
लोथल	रंगनाथ राव	भोगवा नदी	बंदरगाह , मनके उद्योग
चन्हुदड़ो	एन जी मजूमदार	सिंधु नदी	वक्राकार ईंट, मनका निर्माण,
रोपड़	यज्ञदत्त शर्मा	सतलुज नदी	मानव कंकाल, तांबे की वस्तुएँ
राखीगढ़ी	सूरजभान	घग्घर नदी	हाकरा मृदभांड के भंडार
बनावली	आर एस बिष्ट	रंगोई नदी	मिट्टी से बने हल के साक्ष्य
सुत्कागेंडोर	औरेल स्टाइन	दाश्क नदी	किलेबंदी, व्यापारिक केंद्र

उत्तर प्रदेश के हड़प्पा स्थल

स्थल	**जिला**	**विशेषताएँ / प्राप्त सामग्री**
आलमगीरपुर	मेरठ	हड़प्पा सभ्यता का **सबसे पूर्वी स्थल**
हुलास	सहारनपुर	अनाज के दाने, मिट्टी के बर्तन
बड़गांव	सहारनपुर	साधारण मिट्टी के बर्तन
सिंघोल	पश्चिमी यूपी क्षेत्र	ग्रामीण बस्ती के प्रमाण

हड़प्पा सभ्यता महत्वपूर्ण विशेषता

नगर नियोजन प्रणाली

- इसकी सुव्यवस्थित नगर योजना थी, जिसमें चौड़ी सड़कों, पक्की ईंटों से मकानों का निर्माण और उन्नत जल निकासी प्रणाली का उपयोग किया गया था।
- ऊंचाई वाले भाग को नगर-दुर्ग तथा निचले हिस्से को निचला-नगर कहा गया है।
- सड़के एक-दूसरे को समकोण बनाते हुए काटती थी।
- मोहनजोदड़ो का वृहद स्नानागार इस सभ्यता की उन्नत निर्माण कला और स्वच्छता व्यवस्था का उत्कृष्ट उदाहरण है।

आर्थिक परिदृश्य

- आर्थिक दृष्टि से यह सभ्यता कृषि और व्यापार पर आधारित थी, जिसमें गेहूं, जौ और कपास की खेती की जाती थी।
- मोहनजोदड़ो, हड़प्पा एवं लोथल से अन्नागार के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- लोथल एवं रंगपुर से चावल की खेती का प्रमाण मिला है।
- सर्वप्रथम कपास पैदा करने का श्रेय सिंधु सभ्यता के लोगों को दिया जाता है।
- सिंधु सभ्यता के लोगों को बैल, गाय, भैंस, बकरी भेड़ इत्यादि के बारे में जानकारी थी। कूबड़ वाला साॅंड़ इस सभ्यता का सबसे प्रिय पशु था।
- लोथल एक बंदरगाह नगर था जिसके माध्यम से मेसोपोटामिया से व्यापार होता था।
- मेलुहा (सिंधु क्षेत्र) के साथ व्यापारिक संबंध की जानकारी मिलती है।
- इसके अतिरिक्त धातु-शिल्प, मनका निर्माण, मिट्टी के बर्तन और मूर्तिकला भी अत्यंत विकसित थी।
- इस सभ्यता के लोगों को कांस्य, सोना तांबा की जानकारी थी तथा लोहा के बारे में कोई प्रमाण नहीं मिलता।
- इस समय दशमलव पद्धति पर आधारित मापतौल प्रणाली प्रचलित थी।
- सिंधु सभ्यता में प्रयोग किए जाने वाले मुहरों का निर्माण सेलखड़ी से किया जाता था।
- मोहनजोदड़ो से सर्वाधिक मात्रा में मुहरें प्राप्त हुई है।

सामाजिक-धार्मिक जीवन

- धार्मिक रूप से लोग मातृदेवी, पशुपति तथा वृक्षों की पूजा करते थे और उनकी लिपि चित्रात्मक थी, जिसे अभी तक पढ़ा नहीं जा सका है।
- इस समय के लोग धरती को उर्वरता की देवी मानकर उनकी पूजा करते थे।
- सिंधु सभ्यता के लोग यज्ञ से परिचित थे एवं पुनर्जन्म में विश्वास करते थे।
- लोथल, बनावली एवं कालीबंगा से अग्निवेदिका का प्रमाण प्राप्त हुआ है।
- सामाजिक जीवन अपेक्षाकृत समानतावादी था और दफनाने की प्रथा से परलोक में विश्वास के संकेत मिलते हैं।
- प्राकृतिक आपदाएँ, नदी मार्ग में परिवर्तन तथा अन्य कारणों के चलते इस महान सभ्यता का पतन हो गया, फिर भी इसकी उन्नत नगर व्यवस्था और वैज्ञानिक दृष्टिकोण आज भी अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य:

- मोहनजोदड़ो का शाब्दिक अर्थ “मृतकों का टीला” है।
- तौल की इकाई के रूप में 16 के अनुपात का उपयोग किया जाता था।
- सिंधु सभ्यता की लिपि दायीं से बायीं ओर लिखी जाती थी।
- चन्हूदड़ों तथा लोथल में मनके बनाने का कार्य होता था।
- बालाकोट (पाकिस्तान) तथा लोथल सीप उद्योग के लिए जाने जाते थे।
- सुरकोटदा से घोड़े की अस्थियों के अवशेष की प्राप्ति हुई।

वैदिक संस्कृति

- वैदिक युग को दो भागों में विभाजित किया गया है - ऋग्वैदिक या पूर्व-वैदिक युग (1500-1000 ईसा पूर्व) और उत्तर-वैदिक युग (1000-600 ईसा पूर्व)।
- वैदिक साहित्य को चार भागों संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद में विभाजित किया गया है।
- वेद भारत का सबसे प्राचीन साहित्य है।
- चार वेद हैं- ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद।
- ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद को वेदत्रयी या त्रयी भी कहा जाता है।

ऋग्वेद

- ऋग्वेद सबसे पुराना वेद है, भजनों का संग्रह, ऋग्वेद के पुरोहितों को 'होतृ' कहा जाता था।
- 10 मंडल, 1028 सूक्त और 10552 श्लोक (ऋचा)।
- ऋग्वेद के 2 से 7 मंडल सबसे प्राचीन माने जाते हैं।
- गायत्री मंत्र का उल्लेख तीसरे मंडल में किया गया है। इसे विश्वामित्र ने लिखा है। यह भगवान सूर्य एवं सावित्री को समर्पित है।
- नौवां मंडल 'सोम' को समर्पित है।
- शूद्र शब्द का पहली बार उल्लेख 10वें मंडल (सबसे बड़ा) के पुरुष सूक्त (वैदिक समाज शास्त्र) में किया गया है।
- वैदिक काल में गाय को 'अघन्या' माना जाता था। 'अघन्या' का अर्थ है वध के योग्य नहीं।

यजुर्वेद

- इसके अध्ययन करने वाले को ‘अध्वर्यु’ कहा जाता है।
- इसमें ऋग्वेद के श्लोकों का उपयोग करके विभिन्न अनुष्ठानों और यज्ञों को करने की प्रक्रिया के विवरण के बारे में गद्य में वर्णन किया गया है।
- शतपथ ब्राह्मण एक गद्य ग्रंथ है जिसमें यजुर्वेद से जुड़े वैदिक अनुष्ठानों, इतिहास और पौराणिक कथाओं का वर्णन किया गया है।

सामवेद

- भारतीय संगीत शास्त्र प्राचीनतम पुस्तक है।
- इसके अध्ययन करने वाले को 'उद्गाता' कहा जाता है।

अथर्ववेद

- इसके अध्ययन करता को 'ब्रह्म' कहा जाता है।
- इसमें भारतीय औषधि एवं विज्ञान संबंधी जानकारी शामिल है साथ इसमें रोग तथा उसके निवारण के साधन के रूप में जादू टोना इत्यादि की जानकारी भी उपलब्ध कराई गई है।
- वेद में सभा और समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया है।

वेद एवं ब्राह्मण ग्रंथ

वेद	**ब्राह्मण ग्रंथ**
ऋग्वेद	ऐतरेय
सामवेद	पंचविश
यजुर्वेद	शतपथ, तैत्तिरीय
अथर्ववेद	गोपथ

वेद, उपवेद तथा उनके रचनाकार

वेद	**उपवेद**	**उपवेद के रचनाकार**
ऋग्वेद	आयुर्वेद	धन्वंतरि
यजुर्वेद	धनुर्वेद	विश्वामित्र
सामवेद	गंधर्ववेद	भरत मुनि
अथर्ववेद	स्थापत्यवेद	विश्वकर्मा

वैदिक युग में नदियां:

- सिंधु नदी का उल्लेख सबसे अधिक बार किया गया है (इसके महत्व के कारण इसे 'हिरण्यनी' कहा जाता है)।
- सरस्वती नदी सबसे पवित्र नदी थी जिसे 'मातेतमा' (सभी माताओं में सर्वश्रेष्ठ), 'देवितमा' (सभी देवियों में सर्वश्रेष्ठ) और 'नदीतामा' (सभी नदियों में सर्वश्रेष्ठ) के रूप में जाना जाता था।
- ऋग्वेद में यमुना और गंगा नदी का उल्लेख क्रमशः तीन और एक बार किया गया है।

प्राचीन नाम	आधुनिक नाम
अस्किनी	चिनाब
परुष्णी	रावी
विपासा	ब्यास
वितस्ता	झेलम
कुभा	काबुल
सदानीरा	गंडक
शतुद्रि	सतलज
द्दषद्वती	घग्घर

धार्मिक स्थिति

- ऋग्वेद में 'इंद्र' को सबसे शक्तिशाली देवता बताया गया है।
- 'इंद्र' को पुरंदर (किलों का विनाशक) कहा जाता है।

ऋग्वैदिक देवता	**विशेषता**
इंद्र	वर्षा का देवता, युद्ध के देवता, समस्त संसार का स्वामी
अग्नि	देवताओं एवं मनुष्यों के बीच मध्यस्थ
वरूण	जलनिधि का प्रतिनिधित्व करते थे
मरूत	आंधी-तूफान के देवता
पूषन	पशुओं के देवता
अरण्यानी	जंगल की देवी
यम	मृत्यु के देवता
अश्विन	चिकित्सा के देवता
सोम	वनस्पति के देवता

वैदिक काल में राजा की सहायता के लिए नियुक्त अधिकारी

अधिकारी	कार्य
पुरोहित	राजा का प्रमुख सलाहकार होता था।
कुलपति	परिवार या कुल का प्रमुख होता था।
सेनानी	सेना का प्रमुख होता था।
विशपति	'विश' (जनसमूह/कबीला) का प्रमुख होता था।
ग्रामणी	गाँव का प्रमुख होता था।
स्पश	गुप्तचर (जासूस) के रूप में कार्य करता था।
पुरप	किले या नगर का रक्षक होता था।

वैदिक युगीन प्रमुख शब्दावली एवं अर्थ

वैदिक युगीन शब्दावली	अर्थ
अघन्या	न मारे जाने योग्य अर्थात गाय
उर्वरा	उपजाऊ भूमि
लांगल	हल
वृक	बैल
यव	जौ
गोधूम	गेहूँ
करीष	गोबर की खाद
तंदुल	धान
व्रीहि	चावल

उपनिषद

- उपनिषद साहित्य कोई धार्मिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह सभी समय और सभी के लिए एक दार्शनिक विचारों का प्रतिनिधित्व करता है।
- उपनिषद 'ज्ञान' के सिद्धांत पर बल देता है।
- इसकी कुल संख्या 108 है तथा इसे वेदांत कहा जाता है।
- मोक्ष शब्द की चर्चा सबसे पहले उपनिषदों में की गई थी।

उपनिषद	शब्द
मुंडकोपनिषद	भारत का राष्ट्रीय वाक्य 'सत्यमेव जयते' से लिया गया है
वृहदारण्यक	"तमसो मा ज्योतिर्गमय" एवं पुनर्जन्म की अवधारणा उपनिषद में मिलती है
कठोपनिषद	मृत्यु के देवता यम और के नचिकेता के बीच बातचीत की कहानी है
जाबालोपनिषद	चार आश्रम ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास का वर्णन है।

वेदांग

- वैदिक साहित्य को समझने में वेदांग प्रमुख सहायक होते हैं। इनकी संख्या 6 है।

शिक्षा	शिक्षा - स्वर व्यंजन के उच्चारण का व्याख्या करता है।
कल्प	वैदिक कर्मकांड का प्रतिपादन करने वाला वेदांग
निरुक्त	वैदिक शब्दों का अर्थ व्यवस्थित रूप से समझाना
व्याकरण	इसे वेदों का मुख कहा गया है। इसमें प्रकृति और प्रत्यय के रूप में विभाजन करके पदों की व्युत्पत्ति बताई गई है
छंद	यह वेद मंत्रों के सही उच्चारण के लिए उपयोगी है
ज्योतिष	यह काल का निर्धारण करने वाला वेदांग

प्रमुख दर्शन एवं उनके प्रवर्तक

दर्शन	प्रवर्तक
सांख्य	कपिल मुनि
योग	पतंजलि
न्याय	गौतम
वैशेषिक	कणाद
मीमांसा	जैमिनी
वेदांत	बादरायण

शैव धर्म के प्रमुख संप्रदाय एवं संस्थापक

शैव धर्म का संप्रदाय	संस्थापक / प्रमुख प्रवर्तक
पाशुपत संप्रदाय	लकुलीश
वीरशैव / लिंगायत संप्रदाय	बसवन्ना
नाथ संप्रदाय	मत्स्येन्द्रनाथ

जैन धर्म

- जैन शब्द संस्कृत के 'जिन' शब्दों से बना है जिसका अर्थ विजेता है।
- जैन धर्म के संस्थापकों को 'तीर्थंकर' कहा जाता है।
- जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ या आदिनाथ को जैन धर्म का संस्थापक माना जाता है।
- 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म काशी में हुआ था।
- इसके 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर महावीर स्वामी को जैनधर्म वास्तविक प्रवर्तक माना जाता है।

महावीर स्वामी

- इनका जन्म 599 ईसा पूर्व कुंडग्राम (वैशाली के पास) में हुआ था। उनके पिता सिद्धार्थ एक क्षत्रिय शासक थे और माता त्रिशला थीं।
- महावीर का बचपन का नाम वर्धमान था।
- उनकी पत्नी का नाम यशोदा था।
- 30 वर्ष की आयु में उन्होंने सांसारिक जीवन का त्याग कर दिया और कठोर तपस्या एवं साधना के मार्ग पर चल पड़े।
- लगभग 12 वर्षों की कठोर तपस्या के बाद ऋजुपालिका नदी के तट पर साल वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान (कैवल्य) की प्राप्ति हुई।
- ज्ञान प्राप्ति के उपरांत वे केवलिन, अर्हत, जिन तथा निर्ग्रंथ कहलाए।
- जामालि महावीर स्वामी के दामाद एवं उनके प्रथम शिष्य भी थे।
- उनकी मृत्यु 527 ईसा पूर्व पावापुरी में हुई, जिसे जैन धर्म में निर्वाण कहा जाता है।

प्रमुख जैन तीर्थंकर एवं उनके प्रतीक चिन्ह

तीर्थंकर	प्रतीक चिन्ह
ऋषभदेव	वृषभ
अजितनाथ	हाथी
मल्लिनाथ	जल-कलश
संभवनाथ	घोड़ा
शांतिनाथ	हिरण
नेमिनाथ	शंख
सुमतिनाथ	हंस
पार्श्वनाथ	सर्प
महावीर स्वामी	सिंह

जैन दर्शन

- जैन धर्म का मुख्य उद्देश्य मोक्ष प्राप्त करना है, जिसके लिए व्यक्ति को अपने कर्मों से मुक्त होना पड़ता है।
- इस धर्म के अनुसार प्रत्येक जीव में आत्मा होती है और अहिंसा का पालन सर्वोपरि कर्तव्य है।
- जैन धर्म के प्रमुख सिद्धांतों में त्रिरत्न—सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चरित्र—का विशेष महत्व है।
- इसके साथ ही पंच महाव्रत—सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह एवं ब्रह्मचर्य और —का पालन करना आवश्यक माना गया है।
- अहिंसा जैन धर्म का आधारभूत बिंदु है।
- जैन धर्म में अनंत चतुष्टय है- अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत वीर्य एवं अनंत सुख।
- जैन दर्शन में अणुव्रत सिद्धांत, अनेकांतवाद (सत्य के अनेक पक्ष) और स्यादवाद (ज्ञान की सापेक्षता) जैसे सिद्धांत भी महत्वपूर्ण हैं, जो सहिष्णुता और व्यापार दृष्टिकोण को बढ़ावा देते हैं।
- जैन धर्म में तत्व के तीन कारक है- उत्पत्ति, क्षय और स्थायित्व।
- स्थानकवासी संप्रदाय, यापनीय संप्रदाय, श्वेतांबर एवं दिगंबर संप्रदाय का संबंध जैन धर्म से है।

जैन धर्म की प्रमुख संगीति

संगीति	स्थान	अध्यक्ष	मुख्य कार्य
प्रथम जैन संगीति	पाटलिपुत्र	स्थूलभद्र	जैन धर्म के 12 अंगों का संकलन
द्वितीय जैन संगीति	वल्लभी	देवर्धिगणि क्षमाश्रमण	जैन ग्रंथों का लेखन